2023

विदेशी यात्री फाह्यान का भारत का वृतांत

फाह्यान एक चीनी बौद्ध भिक्षु और यात्री थे जिन्होंने 399-414 ई० के दौरान चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) के शासनकाल मे भारत की यात्रा की। वह चीन से निकलकर मध्य एशिया, तुर्किस्तान, अफगानिस्तान होते भारत पहुँचे।

उन्होंने भारत मे बौद्ध धर्म के ग्रंथों को इकट्ठा करने के लिए यात्रा की और दौरान वे नालंदा सहित कई पवित्र बौद्ध स्थलों का दौरा किया। फाह्यान ने नालंदा शहर की यात्रा की थी जो अब बिहार के नालंदा जिले मे है। उन्होंने वहां के कई पवित्र स्तूपों और विहारों के दर्शन किए। हालांकि उन्होंने विशेष रूप से नालंदा विश्वविद्यालय का दौरा नहीं किया था क्योंकि उस समय यह प्रसिद्ध नहीं था।

फाह्यान ने भारत की सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियों का विस्तृत वर्णन किया, यह बताते हुए कि लोग स्वतंत्र थे, शाकाहारी थे और बौद्ध धर्म का गहरा प्रभाव था। उन्होंने लिखा कि मृत्युदंड की बजाय जुर्माना या शारीरिक दंड का प्रावधान था और लोग सुरक्षित महसूस करते थे और घरों में ताला तक नहीं लगाते थे। फाह्यान ने गुप्त साम्राज्य के दौरान के प्रशासन को उदार और कुशल बताया, हालांकि उन्होंने गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय का नाम नहीं लिया।

फाह्यान के भारत के बारे में मुख्य विचार

* सामाजिक व्यवस्था :-
  - लोग खेती करते थे और पूर्ण स्वतंत्रता का आनंद लेते थे बिना किसी बाधा के कहीं भी आ-जा सकते थे।
  - अपराध कम थे और दंड व्यवस्था सरल थी जिसमें अक्सर जुर्माना लगाया जाता था और मृत्यदंड नहीं दिया जाता था।

• अपराधियों के बजाय, चांडाल नामक एक निम्न वर्ग के लोगों को समाज से अलग रखा जाता था

आर्थिक स्थिति :-
• आंतरिक और बाह्य व्यापार प्रगतिशील था जिसमे भारत के बंदरगाहों के माध्यम से कई देशों के साथ व्यापार होता था।

• राजस्व का मुख्य स्त्रोत भूमि कर था और लोग स्वतंत्र रूप से एक भूमि से दूसरी भूमि पर जा सकते थे।

* धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन :-

• बौद्ध धर्म बहुत प्रभावशाली था कई राजा बौद्ध थे। वे मठों और भिक्षुओं को दान देते थे।

• उनका मुख्य उद्देश्य बौद्ध धर्म के ग्रंथों को इकट्ठा करना था। उन्होने नालंदा और पाटलिपुत्र जैसे स्थानों पर संस्कृत ~~का~~ अध्ययन किया।

• उन्होने धर्मार्थ संस्थाओं, धर्मशालाओं और अस्पतालों का वर्णन किया जहाँ मरीजों को मुफ्त चिकित्सा सेवाएँ दी जाती थी।

* यात्रा का मार्ग और विवरण :-

• फाह्यान चीन से रेशम मार्ग होते हुए एशिया, तुर्किस्तान, अफगानिस्तान होते हुए भारत पहुँचे।

• उन्होने समुद्र मार्ग से श्रीलंका की यात्रा की और

वहाँ से कुछ समुद्री तूफान मे फंसकर जावा द्वीप (आधुनिक इंडोनेशिया) पहुँचे।

- उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान एकत्रित बौद्ध ग्रंथों को चीन ले जाकर अनुवाद किया।
फाह्यान की पुस्तक का नाम फो-क्वो-की था जिसका अर्थ है 'बौद्ध राज्यों का अभिलेख'।

जिसे आज कल फाह्यान की यात्राएँ या (A Record of Buddist kingdoms के रूप मे भी जाते है।